पद २९८

(राग: झिंजोटी - ताल: दीपचंदी)

नव्हे योगी तो जगीं। दांभिकपण जाण मना रे।।ध्रु.।। वसें मनीं द्वैत भाव। सर्वात्मक निजाभाव। विर विर विर ज्ञानकळा। दावी जना रे।।१।। आसनी बसुनी झांकी डोळे। दृढ घाली कानीं बोळे। मौन बसे सर्वदा। न बोले कवणा रे।।२।। स्तवन करितां बहुत डोले। प्रीति करूनि तया बोले। माणिक म्हणें द्वेष करितां। राग दुणा रे।।३।।